101 - First - 7 विकास है कि अप provided by: Jarin Barbhuiya Saathi world . 5 (101) 10118 तः आयोगात ना अस्तराण स्वर्धानी विकास जाना देना ना न तः ज्योज्य ज्याना ना ना श्राण्या १ विकास ज्याना स्वर्धियां स्वर्धियां विकास जाना देना नाम िक्यः हिन्दुन्त होता हो सन् विश्व नामाना । विभिन्न नामाना । विभिन्न नामाना । विभिन्न नामाना । विभिन्न नामाना । नहन्ति । क्षां क्षांनानाति । क्षांनानाति । क्षांनाना । क्षांनाना । क्षांनाना । क्षांनाना । क्षांनाना । क्षांना ाडलगप्त , अक्रमतं चित्रं क्रिनेशिष दामा, चित्रं , उत्तानुभ उत र्याक भाक नात्म कालान प्रस्ताम असम्म असम्म प्रया १८०५ - अभनासान उपारंपुर्वाचेत्र अस्ति १ भनाम अनुसन् निर्मा लक्क करा भाम नारलो अपियंग्र अभिने क्रियानिय आयापा गायि ख्यमन पर्दात , किला बाजाजीत स्मृत्य क्रिमान ज्यालाखल ए ज्यातात्त्व साध अस्टात ज्यालुक्त सुल्यानामान्य कीत्र, प्रभान अस्टीनेक नेत्राण परमा व्यमनामा क्याला । जाव जान काना सम्बन्ध विश्वासन स्थापन ना शाक प्रमेन अवस्तामान छेएम अस्नामास नाष्ट्र सामाग्र याष्ट्र <u> अर्रेना चाला[एएव अनुसंज भी तह स्वाय / भारतायाह</u> अनुकां जालाना ह्या अनुसार के सामुका प्राप्त अनुका प्राप्त के अनुसार के प्राप्त के सामुका स्रवित्र हेममा अपना का क्रम क्रम क्रम, नातानाउ - ऋष्ठेदाछ वित्राम सर्वित्र क्रीयनुत्री प्रमान चितुर जाणगान साम्बित्र क्रियान प्रमान प्रमान त्रमहित्र ताम ज्यानियी सिनाहित पत्रप्रक वता जातमत न्यूजा सारियती ने जिन्ही आसन राज्यात जाएमा नाउन गानन सासन . मार्थे आणाउण जेर. क्यांप - नीप असी धीय आफि जारिक व्यांक अस्माप नाइत मान्ने जानाकाएन जाना मन्त्र जानाम), का बंदे निर्माण उ लेंगे जिला में जाला वल काल नीव निर्माण ने ना म्बद्धमा<u>त्र १</u> अत् अवयोत न्यामायकी हाजान अपूर्वातेषाया वर्णान जयः मान-निकेतानिय वीकित्रकालिय समित्र किर्णिक अविकासिक वा उनकाल वार्ता के वार्ति किया जालाखन के एक ने ने विकार वाला मिर्मविभित्र के ज्याहर जा हा उ ए एउनम स्म होर्ग है। क्रिमा जालाजान्य प्रिष्ट् वस्ता ह्वामावजी पंसरवन बाजकमा ७ कियावित सीमि लमावम् वा प्राम्मीक मिम क्रीकि । जाला अमिन पेनेन जी श्री श्रीता श्रीन जीमे लीन मान अग्र पाम जाक क्रमण हा जिल्ली निर्माण विक्रमान क्ला

निहित्यं आठेशन काविष ' अर्ड प्रभित्र कवण शिकि - कारणा

W. E. S. F. E. W. W. W. W.

Date 03,09, 24 (Gaathi) विसंत्रकान जाता लीमातीन जावन अपूर्ण जावाजान नामा जामनीन लाइसायु , नावि। क्षेत्रेशास्त्र विभ वन्यनात व्याचान विभिन्न विभाग अधारा आग्राफर्नी द्विभि जानिक पश्चिमत वालाव उक्त व्यक्तिक नामिक्तिम र्जानाजान ताल प्रतन्तापूर्व स्ववत नापूर्वन, जालावल प्रानु व्यवस्थानु र न्त्रवाक्षित्र ज्ञान्त्रम् ज्ञानस्य कारामीन , रिअन उपास्त्रीत्र ज्ञानस्य ज्ञान अञ्चल क्रोडेबादिय क्रिक्लाबाह साम्रामतं । अस - जालायासा आका आपत्त क्तिश्मिक उक्त क्षीय मान्यामेण नागूर्याष्ट्रम । येथे अञ्चला अमा ज्ञाना अन अय अर्थ | साक्षांकिकं असकाया अञ्चलं उत्तारीतांक लाउ काणावा अधार्यं कालाउल नामश्रीय नाम भाग भाग हिल्हाती . क्रियारम् (२ ३३५). (स्मामुक्का सम्बन्धः न्याने रे क्रिसालः, रसमुन्यास्त (२५५०) · विदेशों (२५५७ - ५०) ; पुराक्तितासमा (२५१२) प्रस्ति । नान्। प्राक्ति विदेश प्रमान स्थाप नान् ज्ञाना ज्ञान व्रेष्ठ कार्यार्त्तरीत व्यक्ता कार्याष्ट्रमें अन्य निर्मेष्ठ ज्ञाप्त व्यक्तिमान वर्षिन प्रतिन्छा खड़ भूमूष्वालय कार्यास्त्रीत ज्ञाएक अस्मानाम्बर्म प्रवास्त्री क्रूनेंग्राम्ह , आला उने अर्ग वा अन्या - निर्यवस्त्र विविधा, स्विधित हिश्चित्रं ज्वाउस दे। वन क्रक्रण क्रिक्मण अनः क्र्रक्रम व स्वातं जात्र काया विभाव स्मिक्स भाग अनिविधि क्षिम्भाष्ट्रतः एति चाहित्र व्याच्याक्रमास्य देनमा व्यानासन प्रमु नेत्याश्रीम तन तार्यात । पार्मानिक । प्राप्तकामान्यक अयः सानव गयाम -व्यवात सक्ताम् , सार्वायय राष्ट्रिय जात ज्यामान क्वन्तुतान गांकि अन पित्रमण्डनाव जिल्लाकि वर्षा की किया कार्य मंत्रीमान जान्ना छन प्रिवाम मिर्टिसिप्री उत्तासी जेक । व्यस सन्तास , स्वार्त्तर्मा द्वेष व्यस अनेना सी शिक्षण स्थिमिनिसिक्स , ठाव का एस जिल्हिक , भी के खन्क जमान स्थिमिनि , प्याप्तानी सी के , अप स्वस्प उद्यन कार्य स्थिमिर्युत अनु के जाना थान स्वाजहरूका अप कार्य सम्बुक्त भागकित खनदेते लायकान वासान्नलका येते (यह असलसान नार्य प्रमाय अरासका विमाधन । in inferior



Date 04, 09, 24

2) Short question ams:

प्राय:- भारतक प्राथिक प्राथिक अपने होते । चित्रांग जालाहरू कत्र क्षित्रीक सामाध्यक अवित् ३

ही किंदिन अकाञ्चल किंगारा ? १ किंद्री क्रियातिस विश्विता ज्याति, योग चित्र क्रियातीक अवर अक्ट्रीच आलाल जूडिन योजनकर्ण संजीनम क्रियाति विश्वित विश्वित जाताज क्रियात

ार्थका । जिल्ला ।

Ans : अमाउडी ,

हिर्मिक्षाम जाना ज्ञान ज्ञान

क्रियाः, (बार्यक्रामा हिल्लास अभ्याप स्वापितः सम्बा विमाना हिल्ला विकार क्षांना हिल्लास्य

क्र जानां उस कार्या कार्यां क

स्ति जाना शुन्न नािक का्रानिक काना जिला स्वर साम निर्णाण प्रति कावानीक पिल्राह्मण्य न प्रति कालायकी १ ३८५४) - आनाकाल नाउन सन्ति सामन वाद्यान जिल्हा निर्णाण न सम्रान्ति एताम स्वीति जाताम स्वीति

। लाहुआयुर न्यायुर जनमन्त्रा याच्या